कृतज्ञता की शक्ति

गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में सिद्धयोग महोत्सव सत्संग

बुधवार, २१ जुलाई, २०२१

आत्मीय पाठक,

शुभ गुरुपूर्णिमा!

मेरे लिए आपको यह बताना बड़ा कठिन है कि जुलाई माह के आरम्भ से ही मेरे हृदय की क्या स्थिति रही है। आनन्दमय जन्मदिवस के माह, जून में ही हर रोज़ मुझे ऐसा महसूस होने लगा था मानो मेरा हृदय बारम्बार श्रीगुरु की कृपा में स्नान कर रहा हो। और इससे पहले कि मैं जान पाती, जुलाई का माह आ गया और अपने साथ लाया ख़ुशियों से भरा गुरुपूर्णिमा का महोत्सव जो श्रीगुरु को स्मरण करने व उनकी पूजा-वन्दना करने का सबसे मंगलमय अवसर है।

हर वर्ष मुझे ऐसा ही लगता है कि गुरुपूर्णिमा का महोत्सव पिछली बार से अधिक भव्य हो ही नहीं सकता। पर, वह हमेशा होता ही है। यही है श्रीगुरु के प्रकाश का सौन्दर्य, है ना? यही है गुरुकृपा की गहनता। यह है श्रीगुरु के आशीर्वादों की करुणा। यह है गुरुज्ञान का स्वरूप और यही है गुरुप्रेम का रसमय सार।

हो सकता है कि आपने यह तय कर लिया हो कि इस वर्ष आप गुरुपूर्णिमा किस तरह मनाना चाहते हैं। निश्चित ही आपके उद्देश्य व आपकी योजनाएँ, आपकी भक्ति, आपके संकल्प और आपकी साधना के फल से जगमगा रही होंगी।

अब, क्या आप यह जानना चाहते हैं कि सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर गुरुमाई जी के पास आपके लिए क्या है? मुझे लगता है कि आप जानना चाहेंगे। तो मैं आपको बताती हूँ।

गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में, मैं आपको सिद्धयोग महोत्सव सत्संग, 'कृतज्ञता की शक्ति' में भाग लेने के लिए आमन्त्रित करती हूँ।

यह सत्संग सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर आयोजित होगा और पूर्वी गोलार्ध में गुरुपूर्णिमा महोत्सव के आरम्भ होते ही आपको उपलब्ध होगा। इस सत्संग में क्रमानुसार निम्न कार्यक्रम होंगे :

- 'श्रीगुरुपादुकापञ्चकम्' का पाठ
  - इन पाँच श्लोकों का पाठ परम्परागत तौर पर श्रीगुरुगीता के आरम्भ में किया जाता है और इनमें श्रीगुरु की शक्ति का मूर्तरूप, श्रीगुरुपादुकाओं का स्तुतिगान किया गया है।
- श्रीगुरुमाई के साथ संकीर्तन
  - यह एक वीडिओ है जिसे वर्ष २००१ के गुरुपूर्णिमा महोत्सव के दौरान श्रीमुक्तानन्द आश्रम स्थित, शक्ति मण्डप में रिकॉर्ड किया गया था। श्रीगुरुमाई द्वारा रचित यह संकीर्तन, गुरुपूर्णिमा का परम्परागत नामसंकीर्तन है — ॐ गुरुदेव।
- धारणा व ध्यान
  - इस धारणा की रचना विशेषरूप से इस वर्ष के गुरुपूर्णिमा महोत्सव के लिए की गई है।

इन कार्यक्रमों के साथ-साथ, आप एक सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक द्वारा, श्रीगुरुकृपा के विषय पर दी गई वार्ता सुन व देख पाएँगे और गुरुपूर्णिमा के अवसर पर दक्षिणा के अपने अभ्यास के एक भाग के रूप में, 'श्रीमहालक्ष्मी स्तोत्रम्' गा सकेंगे।

सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर इस सत्संग के उपलब्ध होने के बारे में एक अद्भुत बात यह है कि आप अपनी सुविधानुसार, किसी भी समय इसमें भाग ले सकते हैं। आप चाहें तो कई बार भी इसमें भाग ले सकते हैं। गुरुमाई जी के साथ होने वाले इस सत्संग— 'कृतज्ञता की शक्ति'— में भाग लेने के लिए आपको आमन्त्रित करते हुए मैं विशेष रूप से उत्साहित हूँ, क्योंकि मुझे इस सत्संग के अनेक तत्त्वों पर काम करने व सेवा अर्पित करने का सुअवसर मिला है और ऐसा करते हुए मैं गहन कृतज्ञता का अनुभव कर रही हूँ। सभी तत्त्वों पर कार्य पूरा कर लेने के बाद मुझे लगा कि यह सत्संग सचमुच एक भण्डारा है जो मन, हृदय व आत्मा को पोषित करता है।

हर दशक में, हर शताब्दी, हर सहस्राब्दी में, संसार में कितने ही उतार-चढ़ाव आते हैं। गुरुमाई जी ने हमें सिखाया है कि इस संसार की, इस भवसागर की यही रीति है। तथापि, सिद्धयोग सिखावनियों का पालन करने से, हम सीख जाते हैं कि अपने जीवन की इन अनेक व विविध परिस्थितियों—वे जिनका हम अनुमान लगा सकते हैं और वे जिनका अनुमान हम नहीं लगा सकते— दोनों का ही सामना हम कैसे करें, उनमें अपना मार्ग कैसे खोजें। यह ऐसा ही है जैसे कि समुद्र की तूफ़ानी लहरों पर 'सर्फिंग' करता एक सवार। उसने लगातार प्रयास करके यह ज्ञान अर्जित किया है कि अलग-अलग ऊँचाइयों

और रफ़्तार की लहरों पर कैसे सवार हुआ जाए। परन्तु *उसे* भी कभी-कभी ऐसी लहर का सामना करना पड़ सकता है जिसकी उसने कभी कल्पना भी न की हो—एक ऐसी लहर जो पहले वाली लहर से बड़ी हो, जो उसकी उम्मीद से ज़्यादा तेज़ी से आए। इस सवार की कुशलता इसी में है कि वह उस अप्रत्याशित परिस्थिति से सामंजस्य बैठा सके, अपने को सँभाल सके, सन्तुलन बनाए रखे और उस चमकते पानी में आगे बढ़ता रहे।

इसी तरह, जब हम सिद्धयोग सिखावनियों को जीने का, सिद्धयोग अभ्यासों को करने का और कृतज्ञता की शक्ति से सतत जुड़े रहने का प्रयास करते हैं, तब हम इस संसार के अशान्त जल में सन्तुलन बनाए रखने में कुशल हो जाते हैं। गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में आयोजित, सिद्धयोग महोत्सव सत्संग का हरेक क्षण, आशीर्वादित क्षण होगा। इसलिए, जब आप सत्संग में भाग लें तो वर्तमान क्षण में एकाग्रता के साथ उपस्थित रहें।

आदर सहित,

गौरी मौरर,
सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।